 ISSN 2581 9917

हाँ अब तुम्हें जलना होगा

ममता कुमारी चौहान
बी.ए. (हिंदी विशेष), मैत्रेयी महाविद्यालय।

जब की गई होगी उस पर तेजाब से वर्षा,
उसके शरीर का रोम-रोम कितना होगा तरसा,
काश कोई होता जो ऐसा न होने देता,
न जाने कितना दर्द होगा उस पर बरसा,
मृत्यु को कितने करीब से उसने होगा देखा,
बह रहा होगा काजल की आँखो का काजल,
उस दर्द को हमने थोड़ी है सहा,
उस दर्द को उसी ने ही है सहा,
कौन करेगा ऐसे कलयुग के रावणों का वध,
जो दिन प्रतिदिन अपने चेहरे का मुखौटा उतार रहे हैं,
अभी न जाने कितनी काजल तेजाब से जलेंगी,
सभी काजल तभी बचेंगी,
जब वह स्वयं ऐसे दुष्टों,
रावणों का संहार करेंगी,
यहाँ कोई राम न आएंगे,
न ही कृष्ण तुम्हें बचाएंगे
क्योंकि तुम कलयुग की सीता हो,
तुम कलयुग की नारी हो,
पर तुम बेचारी नहीं हो,
तुम्हें नया उपमान गढ़ना होगा,
तुम्हें नया इतिहास रचना होगा,
आखिर कब तक शांत अदालतों के आगे,
इन्साफ के लिए रोती और गिड़गिड़ाती रहोगी,
तुम्हें स्वयं ही स्वयं के लिए लड़ना होगा,
तुम्हें जलना होगा,
तुम्हें एक नई हवा बन कर बहना होगा,
तुम्हें जलाने वाले तुमसे पहले जले,
इसलिये-
ज्वालामुखी-सम तेज रखना होगा,
हाँ, अब तुम्हें ही जलना होगा!